

Acharya Anupam Jolly
Astrologer, Ramal Shastri, Vastu Expert

International School of Astrology and Divine Sciences
www.astrologynspiritualism.com, www.ramalastrology.com

रमल विद्या बडफल विद्या

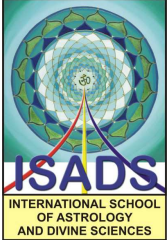
www.RamalAstrology.com

रमल विद्या के द्वारा वर्षफल का ज्ञान



रमल विद्या का उद्गम: भविष्य को जानने की अनेक पद्धतियों का चलन विश्वभर में अनादिकाल से रहा है और मनुष्य किसी न किसी प्रकार से अपनी जिज्ञासा शान्त करने हेतु अनेक विद्याओं जैसे नाडीग्रंथ, प्रश्न ज्योतिष, शगुन विचार, कृष्णमूर्ति पद्धति, पक्षियों की सहायता से भविष्य, रमल पद्धति आदि-आदि का सहारा लेता रहा है।

पौराणिक काल से रमलशास्त्र विद्या प्रचलित है इसकी जानकारी उपलब्ध है। द्वापर युग में यह शास्त्र प्रचलित था इसका उल्लेख मिलता है। इतिहास में जिमुतवाहन के दरबार में रहे विष्णुगुप्त शर्मा इस शास्त्र के उत्तम ज्ञाता थे। पांडवों के दरबार के 'मय' भी इस विद्या में निपुण थे। परमपूज्य आद्य शंकराचार्य भी इस शास्त्र का गहन ज्ञान रखते



थे। रमल शास्त्र के आधार पर ही राजा सुधन्व के दरबार में 'बंद घट' में क्या रखा गया था, सही-सही बताया जा सका। ऐसे बहुत से उदाहरण हैं।

ऐसा माना जाता है कि जनोपयोगी सभी शास्त्रों का उगम उमा-महेश्वर के द्वारा हुआ है। कहा जाता है कि माता पार्वती ने भगवान शंकर से 'सर्वकालीन शास्त्र' के ज्ञान को विशद करने की विनती की और इस शास्त्र का जन्म हुआ। द्वापर युग के उत्तरार्द्ध में किसी विद्वान युवक ने शिवजी की प्रखर आराधना की और शिवजी को प्रसन्न कर लिया। उसने शिवजी से भूत, वर्तमान तथा भविष्य को जानने के ज्ञान का वरदान माँगा। तब शिवजी ने पूर्व रचित 'रमल विद्या' के ज्ञान का वरदान उसे दिया और कहा कि पृथ्वी पर इस ज्ञान के प्रथम ज्ञाता का सम्मान तुम्हें मिलेगा और तुम 'आदम' नाम से पृथ्वी पर जाने जाओगे। यथा समय आदम के अनुयायियों ने इस विद्या का प्रचार एवं प्रसार किया। इसीलिये भारतीय इस बात का दावा करते हैं कि 'रमल शास्त्र' का उगम भारत में ही हुआ है। पुरातन काल से 'पाँसो' का जो खेल खेला जाता है उसे 'रमल पाँसो' के नाम से जाना जाता है। इसीलिये इस शास्त्र को 'रमल शास्त्र' कहलाने की पुष्टि मिलती है।

भारतीयों की तरह यवन भी इस बात का दावा करते हैं कि यह शास्त्र उनके देश से ही सभी जगह पहुँचा है। उनके अनुसार हजरत दानियल अल हिस् सलाम ने राजस्थान के रेगिस्तान में मुहम्मद पैगम्बर की इबादत की और नेमत माँगी कि 'या खुदा', भारत में इस्लाम को पुज्ता बनाने के लिये मुझ पर मेहर नजर कर ऐसा इल्म दे कि जिसकी वजह से आम लोग मुझ पर बे-इंतिहा यकीन करे और मैं इस्लाम की जड़ें मजबूत कर सकूँ। 'दानियाल' की इस प्रार्थना से खुश होकर हजरत जिब्राईल अलियस सलाम (पैगम्बर के दूर) प्रगट हुए और उन्होंने दानियल को रेगिस्तान की रेती में अपने पंजों को हथेली की ओर से दबाने की आज्ञा दी। इस दबाव से रेती में जो आकृति निर्माण हुई उसी के गहरे अज्यास से उस शास्त्र का निर्माण हुआ। 'रमल' शब्द का अर्थ 'रेती' भी है। चूँकि रेत में इस शास्त्र का निर्माण हुआ इसीलिये इसे 'रमलशास्त्र' कहा जाता है। अतः इस शास्त्र के प्रचार एवं प्रसार का दावा वे करते हैं।

वैसे ज्यादातर लोग रमल विद्या को देवकी नन्दन खत्री के उपन्यास चन्द्रकान्ता के पंडित जगन्नाथ नामक किरदार के रूप में भलीभाँति जानते हैं।

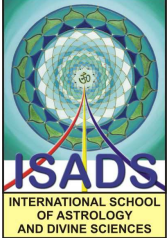
आगामी वर्ष के फलाफल को जानने की रमल विधि :

किसी मनुष्य के आगामी वर्ष के फलाफल को जानने के लिए उस वर्ष के प्रारंभिक दिन अथवा किसी अन्य शुभ दिन में पाँसे डाल कर सोलह भाव की रमल कुण्डली का निर्माण करना चाहिये।

प्रश्नकर्ता मनुष्य के लिए नव वर्ष कैसा रहेगा, इसकी जानकारी प्राप्त करने की विधि निम्नानुसार है -

रमल प्रस्तार या रमल कुण्डली की बनने वाली बारहों शक्तों के योग से शुभाशुभ शक्तों के आधार पर लाभ अथवा हानि का निर्णय करना चाहिए। जिसके लिये नियम निम्न प्रकार से है :-

(१) प्रस्तार के पहले घर से वर्ष के पहले महीने का, दूसरे घर से दूसरे महीने का, तीसरे से तीसरे का, इसी प्रकार बारहवें घर तक क्रमशः उसी महीने का फल निश्चित करना चाहिए। जिस घर में शुभ शक्त पड़ी हो, उस महीने का फल शुभ, जिसमें अशुभ शक्त पड़ी हो, उस महीने का फल अशुभ, और जिसमें मध्यम शक्त पड़ी हो, उस महीने का फल मध्यम समझना चाहिए।



(२) जिस घर में शुभ शकल पड़ी हो, नव वर्ष में उस घर से सञ्जन्धित वस्तु का लाज और जिस घर में अशुभ शकल पड़ी हो, उस घर में सञ्जन्धित वस्तु की हानि कहनी चाहिए।

(३) यदि किसी घर में अशुभ शकल पड़ी हो, परन्तु वह शकल शकुन पंक्ति (जिसे हम स्थिर कुण्डली भी कहते हैं, जिसमें लहियान से शुरू होकर तरीख तक का निश्चित क्रम होता है।) में अपने घर की हो तो उसे वृद्धिदायक समझना चाहिए।

(४) जिस घर में खारिज शकल पड़ी हो, उसका 'व्यय' सञ्जन्धी फल समझना चाहिए। जिस घर में दाखिल शकल पड़ी हो, उसको लाभ सञ्जन्धी फल समझना चाहिए। जिस घर में 'मुन्किलीब' शकल पड़ी हो, उसका फल 'खारिज' के समान समझना चाहिए। जिस घर में 'साबित' शकल पड़ी हो, उसका फल 'दाखिल' के समान समझना चाहिए।

(५) जिस घर की शकल शुभ घर में 'पुनरुक्त' हुई हो उसका फल शुभ समझना चाहिए। यदि अशुभ घर में 'पुनरुक्त' हुई हो तो अशुभ और यदि मध्यम घर में पुनरुक्त हुई तो मध्यम समझना चाहिए।

(६) मास सञ्जन्धी शकल का जो तत्त्व हो, और वह जिस स्थान में पुनरुक्त हुई हो, उसका जो तत्त्व हो- इन दोनों में यदि परस्पर मित्रता हो तो सञ्पूर्ण शुभ फल कहना चाहिए। यदि शत्रुता हो तो अशुभ फल कहना चाहिए।

(७) प्रकारान्तर से, मास सञ्जन्धी शकल जहाँ पुनरुक्त हुई हो, शकुन पंक्ति क्रम में उस घर की जो शकल हो और मास-सञ्जन्धी शकल - इन दोनों के योग से एक शकल तैयार करें। यदि वह शकल शुभ हो तो शुभ और अशुभ हो तो अशुभ फल कहना चाहिए। उत्पन्न शकल प्रस्तार में जिस घर में पड़ी हो, उसके सञ्जन्ध से पूर्वानुसार फल कहना चाहिए।

(८) जिस मास सञ्जन्धी शकल की साक्षी शकल बली हो, वह मास शुभ, अशुभ हो तो अशुभ तथा मध्यम हो तो मध्यम फल देने वाली होती है।

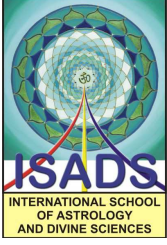
यदि साक्षी शकल शुभ शकलों से बनी हो तो शुभ, अशुभ शकलों से बनी हो तो अशुभ शकलों से बनी हो तो मध्यम फल कहना चाहिए।

साक्षी घर : पहले घर का साक्षी तेहरवाँ तथा आठवाँ, दूसरे घर का साक्षी चौदहवाँ तथा सांतवाँ, तीसरे घर का साक्षी छठा और पाँचवाँ, चौथे घर का साक्षी सौहलवाँ, पाँचवें घर का साक्षी नवाँ, छठे घर का साक्षी दसवाँ, सातवें घर का साक्षी ग्यारवाँ, आठवें घर का साक्षी बारहवाँ, नवें घर का साक्षी पन्द्रहवाँ, दसवें घर का साक्षी छटा, ग्यारवें घर का साक्षी सांतवाँ, बाहरवें घर का साक्षी आठवा घर होता है।

(९) यदि मास सञ्जन्धी शकल की साक्षी शकल शुभ घर में 'पुनरुक्त' हुई हो तो शुभ और अशुभ घर में पुनरुक्त हुई हो तो अशुभ फल कहना चाहिए।


(१०) मास सञ्जन्धी शकल जहाँ पुनरुक्त हुई हो उस घर का जो तत्त्व और उसकी साक्षी शकल का जो तत्त्व हो उन दोनों में यदि मित्रता हो तो शुभ, शत्रुता हो तो अशुभ एवं समता हो तो मध्यम फल समझना चाहिए।

(११) जिस शकल से विचार किया जाता है, उस घर के स्वामी की दूसरी शकल जो हो वह उसकी **शरीक (साझीदार)** होती है। अतः उस शकल के लिए भी साक्षी शकल की भांति ही विचार करना चाहिए।



(१२) जिस शकल की जो विपरीत शकल है, वह उसकी अकश अर्थात् आभास होती है। जैसे कि शकल लह्यान (



) की विपरीत शकल 'अंकीश' () है। अतः 'अंकीश' शकल 'लह्यान' की आभास हुई। यदि आभास शकल शुभ घर में पड़ी हो तो शुभ और अशुभ घर में पड़ी हो तो अशुभ फल समझना चाहिए।

दशा - फल के लिए साबित प्रस्तार

मास का फल कहने के पश्चात् अब दशा-फल के लिए साबित प्रस्तार का नियम कहा जाता है, जो इस प्रकार है-

दशा-फल जानने के लिए सर्वप्रथम पांसे डालकर प्रस्तार बनाएँ। फिर उस प्रस्तार की तेरहवीं, दसवीं, ग्यारहवीं तथा चौदहवीं शकलों से दूसरा प्रस्तार तैयार करें। अर्थात् पहली की जगह तेरहवीं को, दूसरी की जगह दसवीं को, तीसरी की जगह ग्यारहवीं को तथा चौथी की जगह चौदहवीं शकल को मान कर दूसरा प्रस्तार तैयार करें।

इस प्रस्तार में यदि पहली शकल के तुल्य तेरहवीं, दूसरी के तुल्य दसवीं, तीसरी के तुल्य ग्यारहवीं तथा चौथी के तुल्य चौदहवीं शकल हो तो वह प्रस्तार 'साबित' संज्ञक होगा।

यदि इस प्रकार की शकल न मिलें तो फिर उस प्रस्तार की तेरहवीं, दसवीं, ग्यारहवीं तथा चौथी के तुल्य चौदहवीं शकल हो तो वह प्रस्तार साबित संज्ञक होगा।

यदि इस प्रकार की शकल न मिलें तो फिर उस प्रस्तार की की तेरहवीं, दसवीं, ग्यारहवीं तथा चौदहवीं शकल को लेकर पुनः तीसरा प्रस्तार तैयार करें। इसके पहले, दूसरे तीसरे तथा चौथे घर यदि क्रम से तेरहवीं, दसवीं, ग्यारहवीं तथा चौदहवीं शकल से मिलते हों तो यह प्रस्तार साबित संज्ञक होगा।

यदि उक्त प्रकार से शकलें न मिलें तो पुनः तेरहवीं आदि चार शकलों से नया प्रस्तार बनायें और इस क्रिया को तब तक दुहराते रहें, जब तक कि 'साबित' संज्ञक प्रस्तार उत्पन्न न हो। 'साबित' संज्ञक प्रस्तार ६ प्रस्तारों से आगे नहीं जाता, अपितु ६ प्रस्तारों के भीतर ही बन जाता है।

साबित प्रस्तार का फल

यदि पहले प्रस्तार में ही साबित प्रस्तार बन जाए तो उसे सुख एवं लाभ को देने वाला समझना चाहिए। यदि दूसरे प्रस्तार में साबित प्रस्तार बने तो सुख, तीसरे में बने तो धन-प्राप्ति, चौथे में बने तो मध्यम, पाँचवें में बने तो कष्ट एवं छठे में बने तो अत्यन्त कष्टदायक समझना चाहिए।